

॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

क्षेम्याय हरिकेशाय स्थाणवे पुरुषाय च ॥ हरिनेत्राय मुंडाय क्रुद्धायोत्तरणाय च ॥ १५ ॥ भास्कराय सुतीर्थाय देवे देवाय रंहसे ॥ उष्णीषिणे सुवक्राय सहस्राक्षाय मीढुषे ॥ १६ ॥ गिरि शाय प्रशांताय यतये चीरवाससे ॥ बिल्वदंडाय सिद्धाय सर्वदंडधराय च ॥ १७ ॥ मृगव्याधाय महते धन्विने यभवाय च ॥ वराय सोमवक्राय सिद्धमंत्राय च क्षुषे ॥ १८ ॥ हिरण्यबाहवे राजनुग्राय पतये दिशां ॥ लेलिहानाय गोष्ठाय सिद्धमंत्राय वृष्णये ॥ १९ ॥ पशूनां पतये चैव भूतानां पतये नमः ॥ वृषाय मातृभक्त्या येनान्ये मध्यमाय च ॥ २० ॥ सुवहस्ताय पतये धन्विने भार्गवाय च ॥ अजाय कृष्णेनेत्राय विरूपाक्षाय चैव ह ॥ २१ ॥ तीक्ष्णदंष्ट्राय तीक्ष्णाय वैश्वानरमुखाय च ॥ महाद्युतयेऽनगाय सर्वाय पतये विशां ॥ २२ ॥ विलोहिताय दीप्ताय दीप्ताक्षाय महौजसे ॥ वसुरेतः सुवपुषे पृथवे कृत्तिवाससे ॥ २३ ॥ कपालमालिने चैव सुवर्णमुकुटाय च ॥ महादेवाय कृष्णाय त्र्यंबकायानघाय च ॥ २४ ॥ क्रोधनायानृशंसाय मृदवे बाहुशालिने ॥ दंडिने तप्तपसेतथैवाक्रूरकर्माणे ॥ २५ ॥ सहस्रशिरसे चैव सहस्रचरणाय च ॥ नमः स्वधास्वरूपाय बहुरूपाय दंष्ट्रिणे ॥ २६ ॥ पिनाकिने महोदेवं महायोगिनमव्ययं ॥ त्रिशूलहस्तं वरदं त्र्यंबकं भुवनेश्वरं ॥ २७ ॥ त्रिपुरघ्नं त्रिनयनं त्रिलोकेशं महौजसं ॥ प्रभवं सर्वभूतानां धारणं धरणीधरं ॥ २८ ॥ ईशानं शंकरं सर्वेशिवं विश्वेश्वरं भवं ॥ उमापतिं पशुपतिं विश्वरूपं महेश्वरं ॥ २९ ॥ विरूपाक्षं दशभुजं दिव्यगोष्ठं भध्वजं ॥ उग्रं स्थाणुं शिवं रौद्रं शर्वरीशमीश्वरं ॥ ३० ॥ शितिकंठमजं शुक्रं पृथुहरं वरं ॥ विश्वरूपं विरूपाक्षं बहुरूपमुमापतिं ॥ ३१ ॥ प्रणम्य शिरसा देवमनंगं गंहरं हरं ॥ शरण्यं शरणं याहि महोदेवं च तुरुमुखं ॥ ३२ ॥ एवं कृत्वा नमस्तस्मै महोदेवाय रंहसे ॥ महात्मने क्षितिपते तत्सुवर्णमवाप्स्यसि ॥ ३३ ॥ सुवर्णमाहरिष्यं तस्तत्र गच्छं तु ते नराः ॥ इत्युक्तः सवचस्तेन च क्रेकारं धर्मात्मजः ॥ ३४ ॥ ततोऽतिमानुषं सर्वं च क्रेयज्ञस्य संविधिं ॥ सौवर्णानि च भांडानि संचक्रुस्तत्र शिल्पिनः ॥ ३५ ॥ बृहस्पतिस्तु तां श्रुत्वा मरुतं स्यमहीपतेः ॥ समृद्धिं मतिं देवेभ्यः संतापमकरोद्भूशं ॥ ३६ ॥ सततं यत्नो वैवर्ण्यं कुरुष्व च आगमत्परं ॥ भाविष्यति हि मे शत्रुः संवत्स्रो वज्रमिति ॥ ३७ ॥ तं श्रुत्वा भृशं संतप्तं देवराजो बृहस्पतिं ॥ अधिगम्यामरवृतः प्रोवाचेदं वचः ॥ ३८ ॥ इति स्थाणुसंवाधारे वाग्भूते धिक्प्रेषणि आश्विनी चैव विष्णवे चैव ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥